भूमिका

प्रस्तुत शोध की सार्थकता यह है कि आज ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं स्वयं सहायता समूह के माध्यम से उद्योग कर रहीं हैं। वह अपने साथ-साथ गांव का भी विकास कर रहीं हैं। ग्रामीण महिलाएं अब महिला सशक्तिकरण की ओर बढ़ रहीं हैं। धीरे-धीरे ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं भी विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करा रही हैं। जैसे- पंचायत राज, आर्थिक क्षेत्र, शैक्षणिक क्षेत्र, राजनीतिक क्षेत्र आदि में इनकी भूमिका है। पंचायत में महिलाओं के लिए रिक्त सींटे रहती हैं।

स्वयं सहायता समूह के माध्यम से जो महिलाओं ने अपने गृहोद्योग आरंभ किए हैं, उस गृहोद्योगों से अधिकाधिक मुनाफा तो मिला ही साथ-ही-साथ उनके आर्थिक स्थिति में भी काफी बदलाव आएं हैं। इस व्यवसाय द्वारा उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हो गई है। उनके छोटे-छोटे उद्योगों से उनकी आर्थिक स्थिति में बढ़ोतरी हुई है। आज वही महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं। इस प्रकार महिलाएं हर क्षेत्र में अलग-अलग प्रकार से भूमिका निभा रहीं हैं। यह विषय महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक दृष्टि से अहम है, क्योंकि बीसवीं शताब्दी में यह महिलाएं पाटन और उत्थान की स्थिति में नहीं थी।

महिलाओं की स्थिति सुधारने के अनेक कारण थे। जिसका शोध कार्य में विस्तृत वर्णन किया है। ऐसा नहीं है कि यह शोध पहले नहीं हुआ है, लेकिन इस शोध में महिलाओं की वर्तमान स्थिति को दर्शाया है।

खेती में महिलाएं पर्यावरण और ग्रामीण उत्पादन से संबन्धित खाद्य और कृषि संगठन आदि के अनुसार कृषि उत्पादन प्रणालियों में महिलाओं की भागीदारी के विभिन्न स्वरूप तथा व्यापकता को अलग-अलग से बताया है। पशुपालन और दुग्ध व्यवसाय उत्पादन में कार्यरत महिलाएं कई तरह के कार्य करती हैं। जैसे- पशुओं की देखभाल, उनका चारा-पानी, पशुओं की तबेलों की सफाई, गोबर से खाद बनाना और दूध से अन्य पदार्थ बनाना आदि शामिल है। ग्रामीण क्षेत्र में किये गए अध्ययन से हमें पता चलता है कि विभिन्न प्रकार के वन उत्पादों के संग्रहण में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है।

ग्रामीण उद्योगों में महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण है, एक अनुमान के अनुसार लघु उद्योगों की संख्या ज्यादा है। पुरुष मजदूर कृषि कार्यों को छोड़कर अधिक मजदूरी वाले दूसरे रोजगार अपनाते हैं, इसका नतीजा यह हुआ कि ग्रामीण परिवारों में मुखिया महिलाएं हैं। इस तरह ग्रामीण क्षेत्र में नई प्रवृत्ति दिखाई देती है, जिससे कृषि में महिलाओं का प्रभुत्व ज्यादा है।

इस शोध विषय को अध्ययन के लिए चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार विभिन्न योजनाएं बना रहीं है। स्वयं सहायता समूह उन्हीं में से एक है, स्वयं सहायता समूह और महिला सशक्तिकरण के ये चार अध्याय निम्न लिखित हैं -

प्रथम अध्याय- स्वयं सहायता समूह- एक परिचय

इस अध्याय में स्वयं समूह क्या है? समूह का गठन कैसे होता है? किस तरह से समूह कार्य करते हैं? सरकार की कौन-कौन सी योजनाएं हैं? योजना से किस तरह से लाभ मिलते हैं? यह सारी बातों को इस अध्याय में दर्शाया गया है।

द्वितीय अध्याय – स्वयं सहायता समूह एवं महिलाएं

इस अध्याय में भारतीय समाज में ग्रामीण महिलाओं की स्थिति को दर्शाया गया है। स्वयं सहायता समूहों में सहभागी होने से पहले की स्थिति और सहभागी होने के बाद की स्थिति को बताया गया है।

तृतीय अध्याय – विकास और महिला सशक्तिकरण

इस अध्याय में ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं कौन-कौन सी क्षेत्र में कार्यरत है, यह विस्तारित रूप से दर्शाया गया है, जैसे सामाजिक क्षेत्र, आर्थिक क्षेत्र, शैक्षणिक क्षेत्र, राजनीतिक क्षेत्र आदि क्षेत्र में महिलाएं कार्य कर रही हैं। विशेषकर पंचायत राज में महिलाएं समुचित प्रतिनिधित्व और सच्ची भागीदारी साकार कर रही हैं।

चतुर्थ अध्याय- स्वयं सहायता समूह और महिला सशक्तिकरण

इस अध्याय में स्वयं सहायता समूह के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं ने अपने ग्राम के विकास के लिए किए गए कार्यों को दर्शाया है।

यह शोध अध्ययन वर्धा जिला के ग्रामीण क्षेत्र में किया गया है। शोध समस्या पर कार्य के लिए वर्णनात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है।

इस अनुसंधान में पूर्व निर्धारित घटना, सामाजिक परिस्थिति अथवा सामाजिक संरचना का विस्तृत विवरण दिया गया है। शोध हेतु चयनित सामाजिक समस्या या सामाजिक परिस्थिति के विभिन्न पक्षों से संबन्धित तथ्यों को एकत्रित करके उनका तार्किक विश्लेषण किया गया है, और निष्कर्ष भी निकाले गए है। तथ्यों को एकत्रित करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया है। सामाग्री का संकलन मुख्यतः पुस्तकालयों में उपलब्ध ग्रन्थों, पत्र-पत्रिकाओं व विभिन्न वेब-साइटों से किया गया है। इसके अतिरिक्त स्रोतों, मासिक पत्रिकाएं, योजनाएं, वर्तमान पत्र आदि से भी सामाग्री प्राप्त की गई, इसमें दो स्रोतों का समावेश किया गया है-

1. प्राथमिक स्रोत-
   साक्षात्कार अनुसूची
2. द्वितीयक स्रोत-
   पुस्तकें, पत्र-पत्रिका आदि

अध्ययन के उद्देश्य-

प्रस्तुत शोध प्रबंध के अध्ययन का उद्देश्य यह है कि सरकार द्वारा अनेक प्रकार के प्रोत्साहन दिये जाने के बाद आज भी महिलाओं में स्वयं सहायता समूहों के प्रति जागरूकता पुरुषों की तुलना में कम क्यों है? विभिन्न शासकीय नीतियों की जानकारी है या नही तथा साक्षर महिलाएं रोजगार के प्रति कितने जागरूक हैं तथा व्यवसाय में परिवर्तन का स्वरूप क्या है? गांव के आर्थिक, सामाजिक, तथा राजनीतिक जीवन में सफलता के आधार पर महिलाओं की निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी सुनिश्चित करना।

अर्थात्- कुछ लोग गरीबी रेखा से नीचे न होने के बावजूद कई महिलाएं समूह में स्थान पाकर किसी न किसी योजना के अंतर्गत लाभ उठती हैं। यह बात प्रत्यक्ष साक्षात्कार के समय कुछ महिलाओं ने भी कही हैं। रोजगार के जीतने भी योजनाएं आती हैं उसमें से कई योजनाओं का लाभ उठाया जाता है, जो आयकर दाता है उन्होंने भी इस स्वरोजगार योजना के अंतर्गत द्वितीय सहायता प्राप्त करके अतिरिक्त व्यवसाय शुरू किये हैं।

प्रस्तावित शोध समस्या पर कार्य के लिए गुणात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया जाएगा, निदर्शन करने के बाद इस शोध वर्णनात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया जाएगा।

इस अनुसंधान में पूर्व निर्धारित सामाजिक घटना सामाजिक परिस्थिति अथवा सामाजिक संरचना का विस्तृत विवरण दिया जाएगा। शोध हेतु चयनित सामाजिक समस्या या सामाजिक परिस्थिति के विभिन्न पक्षों से संबन्धित तथ्यों को एकत्रित करके उनका तार्किक विश्लेषण किया जाएगा और निष्कर्ष भी निकाले जाएंगे। तथ्यों को एकत्रित करने के लिए साक्षात्कार का उपयोग किया जाएगा।

शोध सामाग्री संकलन

प्रस्तावित लघु शोध कार्य के लिए सामाग्री का संकलन मुख्यतः पुस्तकालयों में उपलब्ध ग्रन्थों पत्र-पत्रिकाओं व विभिन्न वेबसाइटों से किया जाएगा इसके अतिरिक्त स्रोतों, मासिक योजनाएं, वर्तमान पत्र आदि से भी सामाग्री प्राप्त की जाएगी। इसमें दो स्रोतों का समावेश किया गया है-

1. प्राथमिक स्रोत
   साक्षात्कार
   अवलोकन
2. द्वितीय स्रोत
   पुस्तकें, पत्र-पत्रिका, मासिक पत्रिका, आदि उपकरणों का उपयोग किया जाएगा।
   प्रस्तावित लघु शोध के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत का उपयोग किया जाएगा

शोध अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध का क्षेत्र देवली तहसील में आने वाले गांव जहां स्वयं सहायता समूह का गठन हुआ है, ऐसे गांव हमारे शोध का अध्ययन क्षेत्र होगा।